

प्रिय भाई 'सोपान' को

बड़े स्याँ

दृश्य पहला

[गाँव का शफाखाना, समय प्रातः काल । शेरगढ़ का सर-
कारी शफाखाना । एक तिमंजले मकान के सामने एक चौक में
नीम का वृक्ष खड़ा है । वृक्ष के नीचे एक लम्बे चौरस टेबल के तीन
थोर कुर्सियाँ जमी हुई हैं । चौथी थोर एक लफड़ी की बेंच मरीज़ों
के बैठने के लिए पड़ी हुई है । दाहिनी थोर छोटी-सी खिड़की है जिसमें
से मरीज़ लोग दवाइयाँ लेते हैं । टेबल पर एक ~~दवाइयाँ~~ फ्लैजाग,
दो-चार मोटी पुस्तकें, दावात-कलम
कुर्सी पर डाक्टर साहय बैठते हैं]

शशि—झार-ए-टी-रेट—रेट माने घूहा। सी-ए-टी-केट—
केट माने बिकली। केट माने बिकली, रेट माने घूहा। केट माने घूहा—
रेट माने बिकली। ऊँह पाद ही नहीं होता है। उस दिन दादा
कितना अफ़स़ा गा रहे थे ? क्या गा रहे थे ? बालम ? हाँ हाँ ।
गाऊँ तो सही । (गाता है) बालम बाय भैसो मोरे मन में ।
बाय भैसो मोरे मन में ।

सावन बापा तुम न बाये,

मन में मोरे हूक उठत है—

बाय भैसो मोरे मन में ।

(प्रवेश शिरीष—शशि का बड़ा भाई)

शिरीष—यूँ ? तुम क्या कर रहे हो बी ? गाने की भी तमाज़
है कि नहीं ?

शशि (एकाएक खड़ा होकर) बी ?

शिरीष—जी-ई हूँ ! मैं पूछता हूँ सब तुम्हें गाना नहीं आता
किन्तु छिपकाते क्यों हो ? बीच में अपनी टाँग क्यों अड़ाते हो ?

शशि—बी सबकुछ गा रहा था ।

शिरीष—गा रहा था । न तुममें समीज़ है गाने की न शर्छा
को ठीक बालने की । अफ़स़ा बताओ यह गायन तुमसे कहाँ ले
जोता ?

शशि—बी उस दिन शाम को आप लाकाब की पाक पर

बैठे हुए गा रहे थे—मैंने सुना—तुम्हें इच्छा हुई मैं भी गाऊँ ।

शिरिष—हूँ ! तुम अपने बड़े भाई साहब के पीछे-पीछे घूमते हो, और उनके गायन सुनते हो क्यों ?

शशि—जी-जी-नहीं । कल...हरिया, मैं टहलने जा रहे थे तालाब के किनारे । हमने सुना कोई गा रहा है । उधर चब्र दिये । इमलियों के झुरमुट में से देखा आप गायन ललकार रहे हैं । मैंने कहा हरिया, दादा कैसा अच्छा गाते हैं ? हरिया ने कहा—हाँ भई ! तुम्हारे दादा शहर की बड़ी इस्कूल में जो पढ़ते हैं—और जनाब वहाँ बड़े-बड़े सेनिमा थिएटर जो देखते हैं । वे न गायेंगे तो क्या हम और तुम गायेंगे ?

शिरिष—अच्छा तो तुम्हें गायन पसन्द आया ?

शशि—जी ।

शिरिष—जानते हो कौन गाता है इसे ?

शशि—जी नहीं ।

शिरिष—हाँ सच तो है—तुम कैसे जान सकते हो ? इस शेरगढ़ में न सिनेमा है न थिएटर । तुम सुनना चाहते हो ?

शशि—जी ।

शिरिष—सुनो ! तुम बिल्कुल गलत गाते हो । यो गाना चाहिये । (बेसुरे आवाज़ में गाने लगता है) ।

बाजग आय बसो मोरे मन में ।

सावन आया तुम भ आये

आय बसो मोरे मन में ।

मन में मोरे हृदय उठत अब,

कोयल कूकत बन में ।

आय बसो मोरे मन में ।

शशि—वाह ! भई वाह !

शिरीष—यह तो एक ही गायन गाना मैंने । ऐसे तो मैं
पचासों गायन जानता हूँ पचासों ।

शशि—अच्छा ! आप इतने गायन कैसे सीख गये ?

शिरीष—तुम नहीं समझ सकते अभी बच्चे हो । गाँव के
खड़के शहर के खड़कों से भला क्या मुकाबला कर सकते हैं ।

शशि—जी ।

शिरीष—देखो यह दूसरा गायन । वैसा हा मजेदार ।

(वेसुरे राग में गाता है)

सुनो सुनो मैं बन की रानी,

सुनो सुनो मैं बन की रानी ।

मन्त्री तुम पत्थर बन जाना !

राज काज में बाधा दना ।

सुनो सुनो मैं बन की रानी ॥ टेक ॥

शशि—वाह वाह !

(प्रवेश बड़े म्याँ, म्युनिसिपैलिटी के जमादार ।)

बड़े म्याँ—क्यों भैया साहब ! क्या हो रहा है ?

शिरीष—क्यों बड़े म्याँ करेले ले आये ?

बड़े म्याँ—लाहौल बिला कुब्त ! अजी भैया साहब क्या आप भी ऐसी नापाक चीज़ का नाम सुबह-सुबह लिया करते हैं ।
तौबाह ! तौबाह !

शशि—पर बड़े म्याँ वह तुम्हारे सुआफे में जो करेला रखा हुआ है ।

बड़े म्याँ—(साफे को ज़मीन पर फेककर) लाहोर में बिछी कूद पड़ी । क्या कहूँ इस बदज़ात चीज़ को । इसकी टाँग तोड़ डालूँ ? गरदन मरोड़ डालूँ ? इस साले साफे को भी पानी से धोना पड़ेगा ।

शिरीष—पर बड़े म्याँ !

बड़े म्याँ—अजी आग लगाइये इस बड़े म्याँ को और इस नापाक बदज़ात चीज़ को । आपको भी क्या मज़ाक सूझता है भैया साब ?

शशि—अजी उस पानी में—

बड़े म्याँ—हत्तरे करेले की नानी मरे ।

(प्रवेश—डाक्टर साहब हाथ में बेंत घुमाते हुए, मूँछों पर

साव दते हुए । जहरियेदार साका, चूड़ीदार पायजामा, और अम्मा कोट पहना है । उन्हें आते देख दोनो बाबक लड़े हो जाते हैं और भाग जाते हैं)

बड़े म्पूँ—आदाब चढ़ा हुआ !

डाक्टर सा—बड़े म्पूँ ! हकका देना आये ?

बड़े म्पूँ—देख आया त्रिबले !

डाक्टर—शिरीष शशि !

(दोनो का प्रवेश साथ जोकते हुए)

डाक्टर—क्या कर रहा थे ?

दोनों—बी बी बैठे थे ।

डाक्टर—आओ अपना मन्त्र पाद करो ।

(दोनों का प्रस्थान)

डाक्टर—बड़े म्पूँ ! घग्गाजी सेठ की भगीची साफ करवा आये ?

बड़े म्पूँ—जी हुआ ।

डाक्टर—और मग्गाजी सेठ की चरखी ?

बड़े म्पूँ—जी वह भी ।

डाक्टर—बहुत धन्य ! कितने भगी छे गये थे !

बड़े म्पूँ—दम त्रिबले ।

डाक्टर—अपराधचरखी जा गये ?

बड़े म्याँ—शायद आगये है ।

डाक्टर—मरीज़ ?

बड़े म्याँ—कोई नहीं ।

डाक्टर—यहाँ की पब्लिक बड़ी सुस्त है । न पैदाइश न कुल्ल । समझ में नहीं आता यहाँ के लोग क्यों इतने मक्लीचूस हैं ? यहाँ पर तबदीली हुई, इसके पहिले अनेकों गाँव, परगनों में घूमा हूँ—पर यहाँ की जैसी पब्लिक कहीं न देखी ।

बड़े म्याँ—आप बिलकुल ठीक फरमाते है क्रिबले । यहाँ के लोग—बाग ही ऐसे हैं । पर एक दिन इस शेरगढ़ का भी धोल-बाला था हुज़ूर ! शहर में सवारी निकलती थी । महाराजा साहब खुद इस अपने शफाखाने में पधारते थे, और रंडियों का नाच होता था ।

डाक्टर सा०—अच्छा ? तो महाराजा साहब खुद यहाँ पधारते थे ?

बड़े म्याँ—हाँ क्रिबले ! यहाँ आते थे और इस दरअस्त के नीचे, जहाँ आप बैठे हैं कुर्सी पर बैठते थे, और फिर साहब रंडियों का नाच होता था—और डाक्टर साहब के ही घर खाना पकता था, बड़ी चहल पहल रहा करती थी—बस मत पूछो ।

डाक्टर—उस जमाने में तो तुमने खूब देखा भाला होगा बड़े म्याँ—और महाराजा साहब की निगाह भी अन्छी रही होगी ।

बदे म्याँ—क्या कहूँ उन दिनों की बात हुजूर ! इस बदे म्याँ का भी मोल-बाला था उस जमाने में । बदे म्याँ महाराजा साहब के दाहिने हाथ थे । शिकारी पार्सी का तमाम काम और बदेबस्त इस ग्वादिम के हाथ में था । एक दिन की बात बाद आती है हुजूर ! बस होरी के दिन थे । महाराजा साहब का सवारा निकली । लँट और हाथी घोड़े और प्यादे आ रहे हैं । और सवारी आ पहुँची राजाखाने के पास । त्रिबले बस क्या कहूँ ? सारंगी बज रही है—तबले डुमुक रहे हैं और शीरीमाय बस नाच रहा है—मुजरा खे रही है और महाराजा साहब बोले—
अरे हांगदर—बालेगो रे शकार ।'

बस क्या था हांगदर साहब तैयार हो गये । आ रहे हैं, और आ पहुँचे एक बवाबान जगल में । हाँका पड़ गया है—बरप्रजों में सब बड़ गये हैं—और हतने में निकला शेर बम्बर ! महाराज साहब ने कहा— बदे म्याँ मैंने कहा—सरकार । वे बोले—
'बजने दे और ठें ठें और बिल कर दिया साजे को !

हांगदर—वाह वाह वाह वाह !

बदे म्याँ—अब क्या घरा दे त्रिबले ? वे दिन लो गये ।

हांगदर—हाँ ! पर बदे म्याँ ! इन घग्नाजी म-नाजी को ठीक नहीं कर सकते !

बदे म्याँ—क्यों नहीं त्रिबले ? चुटाकियों में ! उसमें कीन-सी

बड़ी बात है । दोनो सेठजी नाम के भूखे हैं—नाम के । बस उन्हें अगर नाम मिल गया तो बस . और फिर चवूतरे का भलादा भी तो अपने पास है । सब कागजात अपने पास हैं ।

डाक्टर सा०—हाँ बात तो ठीक है ।

बड़े म्याँ—तो सब ठीक हो जायगा क्रियले । मैं सब ठीक कर लूँगा । अच्छा इजाजत लूँगा । आदाब अर्ज़ ।

(प्रस्थान)

परदा गिरता है ।

दृश्य दूसरा



[गाँव के मध्य में एक लम्बा गली में मन्ना जी का घर । दाखान का भाग । एक छोटी खटिया पड़ी है । एक कोने में दो तीन बरतन झस्तक्यस्त पड़े हैं । एक ब्याह भी पास ही पड़ा हुआ है । मन्नाजी खटिया के पास टहलते और कुछ हिसाब मिछाने में व्यस्त-से दिखते देते हैं । लान पर बही-लावा, दावात और कलम रखे हैं । दूसरे में हरिया बैठा बैठा गाना गुन रहा है । थोड़ी दूर मुखसीराम सिख-बड़े पर भग पीय रहा है ।]

मन्नाजी—एक दो चार—चार—चार—चार और चार छान ।

कक्का रे केवढ्यो धन्नाजी को सेवढ्यो । आठ, आठ आठ और चार बारह-बारह-बारह चोईस—चोईस—चोईस—चोईस—छिः यह साला हिसाब ही नहीं मिलता ।

(बाहर से आवाज़)—मन्नाजी सेठ ! ओ मन्नाजी सेठ !

मन्नाजी—हरिया ।

हरिया—कई है ?

मन्नाजी—अरे देख तो यह कौन बुला रहा है ?

हरिया—होगा कोई । (गन्ना चूसने लगता है—तुलसीराम की ओर देखकर) अरे तुलसीराम देख तो !

तुलसी—(पीसते-पीसते) तेरी टोंग टूट गई है ? जा देख आ तू ही ।

बाहर से आ०—अजी सेठजी, ओ सेठजी !

मन्नाजी—अरे हरिया के बच्चे ! देख तो कौन है ?

हरिया—अरे तुलसी ! सुनता नहीं, ना देख तो ।

तुलसी—अरे देखता नहीं भंग जो पीस रहा हूँ—वठता नहीं और बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है । देखा न हज़ूर, न कुछ काम करता है न धन्धा, बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है—जा ।

हरिया—काम नहीं करता ? भाजी लेने कौन गया ? दवाई लेने शफाखाने कौन गया ? तेरा दाजी ?

तुलसी (खड़ा होकर, गुस्से में हाथ जोड़ते हुए) जाता मेरे काकाजी ।

(प्रस्थान—कुछ देर बाद प्रवेश)

हरिया—(गप्पा मुँह से निकालकर) कीन हं ॥

तुलसी—बमपुलिस के जमादार ।

हरिया—(गप्पा फेंक एक दम खड़ा होकर) मैं पुलिस जमादार ?

मन्नाजी—धरे तुलसी ! यह क्या गद्गदी है ? क्या आपा है ?

तुलसी—सरकार बाहर बमपुलिस के जमादार खड़े हैं ।

मन्नाजी—हैं ? पुलिस के जमादार ?

तुलसी—हाँ सरकार ।

मन्नाजी—धरे ! हमने कोई चोरी का है—चिनाजी का है—भाड़ा पाड़ा है ? हमारा घर पुलिस का जमादार क्यों आने लगा ?

तुलसी—पर आपा है सरकार में क्या करें ?

मन्नाजी—धरे हरिया के बच्चे दल तो लचमुच !

(प्रवेश—बदे म्याँ)

बदे म्याँ—आदाब—सज्ज !

मन्नाजी—का-हो—आहये आहये बदे म्याँ ! मैं तो दर के मारे मर गया !

बड़े म्याँ—क्या हुआ क्लिबले क्या हुआ ?

मन्नाजी—तुलसी बोला पुलिस के जमादार आये हैं ।

बड़े म्याँ—अह—ह-ह .

तुलसी—सरकार मैने तो कहा बमपुलिस के जमादार ।

बड़े म्याँ—अह-ह-ह—सच तो है बम पुलिस के ही तो जमादार ठहरे—अह-ह-ह.

मन्नाजी—कैसे याद किया बड़े म्याँ ?

बड़े म्याँ—बात कुछ टेढ़ी है पिराइवेट में कहूँगा ।

मन्नाजी—पिराइवेट ?

बड़े म्याँ—ए आपके शाहजादे साहब और इन महाराज को जरा.. ' (छुटकी से बाहर जाने का इशारा करता है)

मन्नाजी—हो-हो । अरे हरिया तुलसी जरा बाहर जाना रे ।

तुलसी—जी सरकार ।

हरिया—ओ-ओ—

(दोनों का प्रस्थान)

मन्नाजी—बैठिये—बैठिये न दरोगाजी ।

बड़े म्याँ—नहीं नहीं बैठने की कोई जरूरत नहीं है । पर एक बात कहनी है । मामला बड़ा टेढ़ा हो गया है ।

मन्नाजी—कौन-सा मामला ?

बड़े म्याँ—अजी वही चवूतरेवाला ।

मन्नाजी—हाँ । पर देखो दुरोगा साहब ! आपकी टेक रेबी खादिये । कुछ भी हो जाय है ।

बदे म्याँ—हाँ हाँ वह तो मैं भी समझता हूँ । पर आपको पता नहीं वह मधुरा इस्बार्ह बड़ा उस्ताद है । शुभा है उसने मिठाइयों का एक यात्रा और डेढ़ सौ रूपय नकद डाक्टर साहब के पास भिजवाय है । और यह तो आप जानते हैं कि सारा मामला उनके हाथ में है—वे ही म्युनिसिपैलिटी के प्रेसीडेंट हैं ।

मन्नाजी—पर दुरोगाजी ! ऐसा हो ही कैसे सकता है ! वह बहुतरा मन ही कैसे सकता है ! दस्तावेज के अन्दर तो कोई लिखा पढ़ा मरे ज़वाब स है नहीं । और ग़ल्लो तो सरकार का है—उसके बाप की तो है नहीं ।

बदे म्याँ—हाँ हाँ यही तो मैं भी कहता हूँ । यह कैसे हो सकता है ! पर मामला कुछ देना है । बहुतरा बहिसे से बना है सिर्फ यह धन कुछ बड़ा बना रहा है । घासकज तो वो कुछ प्रेमाइड साथ ने कह दिया वही सब । पर तुम आप तो जानते हैं कि इन्फर साहब तो मेरे हा हाथों में हैं पर मामला ऐसे कैसे थोड़े हा ठीक हो सकता है !

मन्नाजी—तो कैसे हो सकता है ?

बदे म्याँ—जै बताऊँ ?

मन्नाजी—हाँ !

बड़े म्याँ—आप और धन्नाजी दोनों मिलकर डाक्टर साहब के पास जाओ और कुछ नजराना-चजराना—हूँ—मामला यों ठीक हो जायगा ।

मन्नाजी—पर बड़े म्याँ ! तुम देखते हो हम तो अब बूढ़े हुए और धंधा-रुजगार कुछ चलता नहीं ।

बड़े म्याँ—अच्छा खैर ! तो मैं इजाजत लेता हूँ सेठजी !

मन्नाजी—अजी वाह ! क्या है इतनी जल्दी । पान-बान तो लो ।

(प्रवेश—धन्नाजी)

धन्नाजी—यह सुसरी मुन्नो की माँ ! मिल जाय तो ढाँग ही तोड़ डालूँ—गरदन ही मरोड़ डालूँ—सुसरी कहों की ।

मन्नाजी—धन्नाजी ?

धन्नाजी—हाँ मन्नाजी !

मन्नाजी—बड़े म्याँ आये हैं ।

धन्नाजी—एँ ! क्यों आये हैं ?

मन्ना—उसी चबूतरे के मामले में ।

धन्नाजी—हाँ ! तो बड़े म्याँ क्या देर है ? लगा दो गोली बस सुसरे मधुरिया को । कुछ भी हो जाय पर चबूतरा बचने न पाय हूँ ।

बड़े ग्याँ—वाह ! क्या कही ? पर खानाव में तो कह चुकी जो कुछ कहना था । मामला सारा तुम्हारे हाथ है ।

धना—क्या मामला ? मैं भी तो सुखी ।

बड़े ग्याँ—मैं कहता हूँ—कोई फूल की टोकरी है कुछ मने मिठाइयाँ हैं—मिठावाइये डाक्टर भाइव के घर, और उनसे मुला ज्ञात काजिये । कुछ धैली बैजी हूँ—जानते हो उस मधुरिप के बच्चे ने—नत्रद देद सो रुप हूँ ।

धना—पर बड़े ग्याँ ! हांगरजी तो रिशवत बिशवत नहीं लेते ।

बड़े ग्याँ—हाँ हाँ—मैं कहाँ कहता हूँ रिशवत लेते हूँ । उनके बच्चे तो मिठाई खा सकते हैं । भलेमानसो उनके बच्चों के हाथ में तो रख सकते हो । भाई यह बोका मेरे सर । सुयतो रुप हाई सी ठीक कर लो ।

मनाजी—डाइ लो ?

धनाजी—जगाओ गोली डाई लो क । वाह यह भी क्या ? नाम लो रह जायगा । भाई टेक लो रह जायगी । उस सुतरे मधुरिया को भी तो पता पड़ जाय की खेरगद के महाजनों से मुठ भेद करना खीटियों का खेल नहीं । हाँ बचाजी याद करे पाद । बतादूँ बचाजी को हूँ ।

बड़े ग्याँ—यस तो फिर क्या देर है ? सेठ साब ! समझ लो मामला पार है ।

दोनों—हाँ हाँ ! परवाह मत करो ।

बड़े म्याँ—अच्छा तो आदाब अर्ज़ ।

दोनों— आधा मरज । आधा मरज ।

(प्रस्थान—बड़े म्याँ)

धन्नाजी—अच्छा तो मैं जाता हूँ । दरसन परसन करणा है ।

मन्नाजी—अच्छा ।

(प्रस्थान—धन्नाजी)

(प्रवेश—शेठाणीजी)

मन्नाजी—रोटी पका ली ?

शेठाणीजी—रोटा खावगा के भाटा मैं पूछू हूँ अणा के साथ
थें काई बातों कर रखा छा जी ?

मन्नाजी—वाते ? कुछ भी तो नहीं ।

शेठाणी—ए घणो हरामी मनक है यो थांको बड़े म्याँ ।
मैं के दूँ हूँ हाँ—इँका केण। मैं आया तो डाढ़ी मूच्छ्याँ उसेड
लूँगी हूँ ।

मन्नाजी—नहीं नहीं, मैं ऐमा उल्लू थोड़े ही हूँ । बड़े
म्याँ बड़े म्याँ कौन से बाग़ की चिडिया हैं ।

शेठाणीजी—ओर वू धन्नो शेठ कसाँ आयो छो ?

मन्नाजी—धन्नाजी ? ओ घो तो मेरे दोस्त हैं, मुझी से
मिलने आये थे ।

रोझ्या—ए—मधुरिया हलवाई का चवूतरा की बात पढ़या हो तो घर छोड़ भाग जाऊँगी। हँ क पू हूँ—बाल जाय चवूतरो और नरक में जाय पाँको घनो की !

रोझ्या—नहीं नहीं। तुम कोई बिता मत करो। स ठीक हो जायगा। सब ठीक हो जायगा !

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[दृश्य पहले सीन का । डाक्टर साहबवाली कुर्सी पर शशि बैठा-बैठा सबक याद कर रहा है]

शशि—बड़ी परेशानी है । कुछ समय में ही नहीं आता । घर में रहते हैं तो पिताजी अंग्रेजी पढ़ा-पढ़ाकर नाक में दम कर देते हैं ! और उधर इस्कूल में जाते हैं तो मास्टर साब रटा-रटा कर दम निकालते हैं । चलो भई, कविता याद कर डालूँ ।

हे पिरमो आनन्द दाता

ज्ञान हमको दीजिये ।

शीघ्र सारे दुगुणों को,
 दूर हमसे काजिये ॥
 खीजिये हमको शरण में
 हम सदाचारी बनें ।
 ब्रह्मचारी धर्म रचक
 भीर ब्रह्मचारी बनें ॥

(रुदता है)

(प्रवेश—हरिषा हाथ में भीरा और छोरी लिये)

हरिषा—क्यों भीरा खोजना है ॥ क्या कर रहे हो
 बैठे-बैठे ?

शशि—भई कविता याद कर रहा हूँ । साजी याद ही
 नहीं होती ।

हरिषा—कौनसी कविता ?

शशि—हे प्रभो आनन्द दाता—

हरिषा—आह ! वह कविता याद नहीं होती ? नहीं
 सहज है ।

शशि—तुम्हें याद है ?

हरिषा—हो-भो । क्यों नहीं ?

शशि—अच्छा तो सुनाओ ।

हरिषा—सुनाऊँ ?

शशि—हाँ ।

हरिया—सुना ही दूँ ।

शशि—हाँ हाँ ।

हरिया—अरे यार ! क्या धरा है उस कविता में ? अच्छा फिर सुनायेगे । अभी भौंरा खेल ले । चलो ।

शशि—ना भई ! मुझे नहीं खेलना । अभी कविता याद करनी है—फिर पिताजी का इंग्लिश रटना है ।

हरिया—वाह अंग्रेजी तो यों मिनटो में याद होता है । उसमें ढरने की क्या बात है भला ?

शशि—नहीं माफ़ करें, मैं खेलना नहीं चाहता ।

हरिया—अच्छा भई ! तुम्हारी भरजी । पर तुमने हमारे क्लास की कविता नहीं सुनी ?

शशि—नहीं पर पहिले मेरे वाली ही कविता सुना दो न ?

हरिया—अच्छा जो तो सुनलो—

हे प्रभो आनंद दाता ।

शीघ्र सारे दुर्गुणो को ॥

शशि—गलत गलत !

हरिया—वाह गलत कैसे ? खुद को तो आता नहीं, और योंहीं बीच में टॉग अड़ाते हो ।

शशि—वाह—फिताव में बताऊँ ?

हरिया—नहीं देखनी किताब ।

शशि—क्यों मँपते हो जाला अब ?

(प्रवेश—शिरीष)

शिरीष—यह क्या सबक मचा रक्खा है बी तुमने ?

(शशि कुर्मी पर से उठ जाता है । शिराव उसी पर बैठ जाता है—और भज पर पड़े रुखर को उठाता है ।)

शिरीष (रुखर को मेज पर ठपकारकर) हरिया ! क्या शोर मचा रहे थे बी तुम ? तुम्हें याद नहीं मैं ऊपर अपनी अँग्रेजी कविता याद कर रहा था ? हमारी पढ़ाई में डिस्टर्ब करते शर्म नहीं छाती ?

हरिया—बी । हमलोग अपना सबक याद कर रहे थे ।

शशि मैया अपनी कविता याद कर रह थे ।

शिरीष—हाथ में भीरा लेकर कविता याद की जाती है क्यों ?

हरिया—(चुप रहता है)

शिरीष—मैं कहता हूँ—अगर तुम लोग शहर में घाघो तो पता चले सबक किस तरह याद किया जाता है । सबक याद करना बच्चों का खेल नहीं । हाथ में भीरा है और सबक याद कर रहे हैं । पता भी है, रात रातभर लयकर हटा करते हैं तब यही मुरिकल मे सबक याद होता है । सबक याद करते हैं ।

तुम लोग क्या सबक याद कर सकते हो ? चोटी बाँधकर रट लगाओ—रात के दो दो बजे तक जागो—ऊँघ आवे तब दौड़ लगाओ—चाय पीओ—गालों पर चाँटे लगाओ—तब मुश्किल से सबक याद होता है ।

(प्रवेश—बड़े म्याँ)

बड़े म्याँ—भैया साच ! डाक्टर साहब आ रहे हैं ।

शिरीष—अभी ही ? शहर में चक्कर लगा आये ।

बड़े म्याँ—जी हों—और बड़े गुस्ते में हैं ।

शिरीष—अच्छा ? चलना चाहिये ।

हरिया—भागो ।

शशि—दौड़ो ।

(तीनों का भाग जाना)

डाक्टर सा०—बड़े म्याँ !

बड़े म्याँ—क्रियले ।

डाक्टर सा०—कम्पाउंडरजी क्या कर रहे हैं ?

बड़े म्याँ—शफाफ़ाने में शायद दवाई बना रहे हैं ।

डाक्टर सा०—जरा बुलाओ तो ।

बड़े म्याँ—जाया क्रियले ।

(प्रस्थान)

डाक्टर—बड़ा भारी मज़ा है (किताबों को उठा, पन्नों को

ठकते हुए) खुश है । न्यूमोनिया के सिम्पटम्स । पचता नहीं भूख लगती नहीं । भूख जाना होगा ।

(प्रवेश—बड़े म्या कम्पाउटरजी के साथ)

कम्पा०—परमाह्वे साहब ।

डाक्टर—कम्पाउटरजी ! अपने वहाँ अस्परीन है ?

कम्पा०—जी है ।

डाक्टर—पेपिन-पेप्सीन ?

कम्पा०—है ।

डाक्टर—टाका टायल्स ?

कम्पा०—है

(प्रवेश—घन्नाकी और मन्नाजी)

घन्नाजी—अयरामजी की सरकार !

मन्नाजी—रामराम सा रामराम ।

डाक्टर—हुँ—तो पेपिन पेपसिन टाका टायल्स तीनों हैं ।

कम्पा०—जी ।

डाक्टर—पेनाक्रियाटीन ॥

कम्पा०—है ।

डाक्टर—अच्छा तो देखो नुस्खा लिख लो । याद रख लोगे ?
अवानी ?

कम्पाउटर—जी जी ।

डाक्टर—अच्छा तो वन ग्रेन पेपिन, दू ग्रेन्स पेप्सीन, दू ग्रेन टाका डायस्टस, तीन ग्रेन्स पेनक्रोएटीन—तीन पुडियाँ ।

कम्पा०—भोट्टीक किबले ।

डाक्टर—जाइये ।

कम्पा०—भोत अच्छा ।

(प्रस्थान)

डाक्टर—ओह थाप ? (सेठजी की ओर देखकर)

धन्नाजी—रामराम साब !

मन्नाजी—रामराम सरकार !

डाक्टर—बैठिये—बैठिये सेठ साहब !

मन्नाजी—नहीं नहीं खड़े रहेंगे । उसमें कौन-सी बड़ी बात है ।

धन्नाजी—हाँ हाँ—कौणसी बड़ी बात है ?

डाक्टर—नहीं नहीं बैठिये—बैठिये । बड़े म्याँ ! कुर्सी

धन्नाजी—नहीं नहीं सरकार ! यहीं मजे में हैं । बेच पर बैठ जाते हैं ।

मन्नाजी—हाँ हाँ यही बेच पर मजे में हैं ।

डाक्टर—बड़े म्याँ ?

बड़े म्याँ—हुजूर !

डाक्टर—इन पुडियों को मथुरा हलवाई के घर पहुँचा आना ।

बड़े म्पॉ—मोटीक त्रिबले ।

डाक्टर—अमी ही पहुँचनी चाहिण । दूसरी दवाई के छिप
बोतल भी ले आना ।

बड़े म्पॉ—बिना शक ! अमी ही पहुँच जायगी त्रिबले ।

डाक्टर—और बड़े म्पॉ !

बड़े म्पॉ—जी !

डाक्टर—एक पुदिवा हसी बक्त दी जाय !

बड़े म्पॉ—त्रिबले ।

डाक्टर—बड़े दिनों में पधारना हुआ सेटजी ?

मन्नाजी—हाँ सा ? विचार तो बहुत दिनों से किया पर यह
धन्ना-रुजगार !

धन्नाजी—सच पूछो तो काम से पुरसत नहीं मिलती ।

डाक्टर—हाँ—वो तो मैं भी जानता हूँ । आप लोगों को
काम न हो तो फिर थोर किसे होगा । मेरे आवक कुछ काम !

मन्नाजी—हूँ—हूँ—हूँ—आप तो शरीरपरवर हैं ।

धन्नाजी—आप तो हमारे माखिक हैं माखिक ।

डाक्टर—बड़े म्पॉ ! ऊपर से पान-थान मँगवाओ तो ।

बड़े म्पॉ—जी अमी मँगवाये ।

(प्रस्थान)

डाक्टर—और समाचार सुनाइये ।

धन्नाजी—आप की महरबानी चाहिये । क्यो मन्नाजी ।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी । बिलकुल ठीक है । गरीबों पर रहम की निगाह चाहिये ।

(प्रवेश—दो नोकर—हाथ में ढँके मिठाइयों के थाल लिये हुए)

डाक्टर—यह क्या ?

धन्नाजी—हँ—हँ सरकार कुछ भी नहीं । बच्चों के लिए मिठाइयाँ ।

डाक्टर—पर इसकी क्या जरूरत है ?

मन्नाजी—वाह सरकार ! जरूरत कैसे नहीं । हमारे बच्चे नहीं खायेंगे !

धन्नाजी—वाह साब ! बच्चे मिठाई न खायेंगे तो फिर क्या हम लोग खायेंगे !

डाक्टर—पर मैं इसकी जरूरत...

धन्नाजी—देखो डांगडर साब ! बच्चों की बात में आप मति बोलो । हाँ साब !

मन्नाजी—हाँ साब ! बच्चों की बात में आप न बोलिये ! हाँ साब ! थरे क्या खड़ा है ? ले जा ऊपर !

डाक्टर—खैर !

(दोनों सेवकों का सामने चला जाना)

डाक्टर—आजकल व्यापार कैसा है ।

मन्नाजी—मामूली सा है ।

धन्नाजी—आपसे एक बात

डाक्टर—हाँ हाँ कहिये कहिये ।

धन्नाजी—बात तो आप जानते ही हैं—चूतरेवाली । हमारी गल्लो में वह चूतुरा न बचने पावे । मधुरिया हलवाई चूतुरा बचवाना चाहता है । यह कैसे हो सकता है ।

मन्नाजी—हाँ साब ! हमारे बाप हमारे चूतुरा न था—आज कैसे बच जाय ?

धन्नाजी—कुछ भी हो जाय साब ! पर चूतुरा बचने न पाय । हाँ साब !

डाक्टर—आपका कहना ठीक है—पर मुझे जगह पर जाकर मुभाइना करना होगा । फिर कह सकता हूँ—अभी भला कैसे कुछ कहा जा सकता है ।

धन्ना—मुभाइना—मुभाइना ठीक है—पर इस तो आपको जानते हैं । सब आपके हाँ हाथ है । आप तो हमारे माजिक हैं ।

मन्ना—हाँ सा ! आप ही तो माजिक हैं । क्यों धन्नाजी !

धन्नाजी—हाँ मन्नाजी !

डाक्टर—और आप चिन्तन करें । सब ठीक हो जायगा !

मन्ना—वाह साब ! काँई केयी ! आप ही का तो आसरा है ।

(प्रवेश—बड़े म्यों शशि के साथ । हाथ में पान की तश्तरी)

डाक्टर—लीजिये सेठजी पान !

धन्नाजी—अजी साब ! पान-वान की क्यों तकलीफ की ।

मन्ना—हाँ साब ! पान की क्या जरूरत है ?

(प्रस्थान—शशि)

डाक्टर—बड़े म्यों ?

बड़े म्यों—हुजूर !

डाक्टर—स्कूल का जलसा कब होनेवाला है ?

बड़े म्यों—कल कियले !

डाक्टर—तो हेडमास्टर साहब से कहा जाय कि जलसे के सभापति धन्नाजी और मन्नाजी को बनाया जाय ।

बड़े म्यों—बहतर है हुजूर ।

धन्नाजी—नहीं नहीं सरकार ! यह काम तो आपका है ।

मन्नाजी—हाँ—आपही का है ।

डाक्टर—वाह ! इसी शेरगढ़ के सेठ साहब गाँव के सार्व-जनिक कार्यों में मदद न करेंगे तो भला कौन करेंगे ? ऐसा नहीं हो सकता । आपको मीटिंग में आना होगा । समझे ?

धन्नाजी—हँ-हे ।

डाक्टर—वहीं साहब वह तो अच्छा काम कर रहे हैं। क्यों बटे म्याँ !

बटे म्याँ—बिल्कुल ठीक फरमाते हैं ज़िन्दगे !

डाक्टर—अच्छा सेठ साहब ! तो आप तैयार रहिये ! मुझे एक मरीज़ को देखने जाना है !

धन्या—हाँ हाँ पधारिये ! पधारिये !

मन्ना—जरूर ! जरूर !

परदा गिरता है ।

दृश्य चौथा

[मन्नाजी का घर । एक ओर शिला पड़ी है, पास ही पीसने का पत्थर । घर की चीजें थस्त-व्यस्त पड़ी हैं । एक ओर खटिया पड़ी है । हरिया बस्ता खोलकर पढ़ रहा है ।]

हरिया—हेड-मास्टर साहब ने कहा है, ललसे के लिए कविता याद करके लाना । पढ़ें, भाई पढ़ें—और रट डालें ।

एक था बन्दर, छोटा-सा बन्दर,
रहता था अन्दर, शहर के अन्दर ।

शहर या अन्धा बहुत ॥ सुन्दर
नाम या उसका शहर खलदुर ॥

(२)

शहर में खड़ा या सुन्दर मन्दर
उसके ऊपर रहता या बन्दर ।
उसको काटने चापा चकुन्दर
बोले उदा वो हूँ खे मतर ॥

(प्रवेश—गुलसीराम)

गुलसीराम—भग ! बाह रे मेरी भग ! बाह रे मरा भग !
क्या भग की महिमा का बखान करूँ मारूँ ! शिवपुराण में भी छो
बिखा है :—

दग में इक दग भीम दग है ।
नग में इक नग भारत नग है ॥
चग में इक चग शिव चग है ।

इसी प्रकार—रग में इक रग भग रग है ॥

जो न पीये भग का दूधो
सा खट्खटों से खट्खटी भक्षी ।

बाह रे मेरी भग ! बाह रे मेरी भग ॥

सेठ साहब बोले, 'गुलसीराम रे ! मैंने कहा 'भीतरकार' ।'

सेठजी बोले, 'आज जलमे में जाना है, जल्दी भंग तैयार कर ढालना । मैंने कहा, 'जी सरकार ।'

चल भई भंग पीस डालूँ । (भंग पीसता है)

हरिया—मैं कहता हूँ यह साली कविता ही याद नहीं होती । (फिर से पढ़ता है) कुछ समय में ही नहीं आता । आज इस्कूल का सालियाना जलसा होनेवाला है । हेड-मास्टर साय ने कहा है, बन्दर की कविता याद करके लाना , पर साली याद ही नहीं होती ।

तुलसी (जोर से भंग पीसते-पीसते) हमारे वेद में, हमारे शास्त्र में, हमारे पुराणों में भंग की बड़ी महिमा लिखी है । पुराने जमाने में शिवजी महाराज भंग के लोटे के लोटे ही नहीं, भग के घड़े के घड़े ही उड़ा जाया करते थे । और वो मोटे पेटवाला हुन्दर भगवान, अभी माँ के पेट से ही निकला था कि सोमरस के तालाय के तालाय उड़ा गया था ।

हरिया—क्यों तुलसीराम ?

तुलसी—क्या है ?

हरिया—तो पहिले जमाने में सब लोग भंग पिया करते थे ?

तुलसी—हाँ, हाँ ! जैसे तू बैठे-बैठे गन्ना चूसा करता है, वैसे ही सब लोग भग पिया करते थे ।

हरिया—शुद्धा ? तो भंग कैसी लगती है ?

तुलसी—वाह ! बहुत अच्छी । मीठी-मीठा चरकी-चरका ।
शिवपुराण में भी तो लिखा है —

मीठी माठा, चरकी चरकी
हल्की हल्की फुरकों जैसी ।
अच्छी अच्छी, चमूत जैसी,
ऐसी भग ऐसी भग ॥

(२)

ठण्डी ठण्डी, बर्फ के जैसी
घोली घोली दूध के जैसी ।
मीठी माठी चमूत जैसी
ऐसी भग ऐसी भग ॥

(३)

पतली पतली बस्ती जैसी
घोला घोली, गाय के जैसी ।
मीठी मीठा चमूत जैसी
ऐसी भग ऐसी भग ॥

हरिया—मुझे पिनाओगे ।

तुलसी—ना भाई सड़ साब बाराह का कापें लव ?

हरिया—मैंने सुना है तुम्हें भग बहुत अच्छी लगती है ।

मैंने सुना है—हमारे मास्टर साहब कहते थे कि भंग तो शिवजी महाराज भी पीते थे । देखो न यह साली कविता ही याद नहीं होती । रटते रटते तमाम दिमाग खराब हो गया—पर ..

मैं पढ़ता हूँ, तुम भी पुराने जमाने में पढ़े थे ?

तुलसी—हाँ, हाँ । हमारी गाँव की इस्कूल में—पर तुम्हारी तरह नहीं—हाँ ।

हरिया—कैसे पढ़े थे ? कहो तो ?

तुलसी—कैसे पढ़े थे ? देखे ऐसे ।

कक्का रे केवढ्यो, खर्रा रे खेवढ्यो ।

गगा रे गधेढो, घघा रे घाघरो ॥

और ठठा रे ठठरो, ढढा रे ढंढेरो ।

लला रे रे लखेरो, चचारे चचेरो ॥

हरिया—हा—आ आ—हा—आ—आ । यढ़ा मज़ा आता होगा । पर मुझे भंग

तुलसी—अच्छा अच्छा । परवा मत करो—जस्स पिना-ऊँगा । पर किसी से कहना मत कि तुलसी ने भंग पिलाई है ।

हरिया—नहीं, नहीं, मैं ऐसा उल्लू थोढ़े ही हूँ ।

तुलसी—अच्छा, अच्छा तो मुझे भंग पीस लेने दे ।

(पीसने लगता है—फिर पीसते पीसते)

भंग को पीसता हूँ और मेरे रोम-रोम पढ़े हो जाते हैं ।

और पिसी हुई भग का छोटा सामने रखता हूँ, और मन बदा की तरह बूढ़ने जगता है बूढ़ने । और जब भग का छोटा पदा जाता हूँ तब तो मन और का चोख का तरह नाचने लगता है, नाचने ।

(प्रवेश—मम्नाजी)

मम्ना—अरे हरिया ?

हरिया—कहाँ है ?

मन्ना—अरे तुजसी ?

तुजसी—सरकार !

मन्ना—अरे भई मेरा खाता कहाँ है ?

तुजसी—सबूक में रख दिया सरकार !

मम्ना—भग पीस बाबू ?

तुजसी—पीस रहा हूँ सरकार ! अभी पीस बाबूता हूँ, सरकार !

मन्ना—पीस बाबूता हूँ सरकार ! तुम्हें क्या नहीं, हमें बजसे में जाना है । तुम बिजकुछ गप्पे हो ।

तुजसी—ठीक है सरकार !

मन्ना—अच्छा बताओ तो हरिया की बीजी कहाँ है ?

तुजसी—हरिया का बीजी सरकार ?

मम्ना—भुनके नहीं बहरे हो क्या ?

तुलसी—नहीं सरकार ।

मन्ना—सरकार सरकार क्या लगा रखी है ? कहाँ है सेठाणीजी ।

(प्रवेश—सेठाणीजी)

सेठाणी—यारी यारी । कई काम है जी ?

सेठ—मैं—मैं—मैं पूछता था तुम कहाँ गई हो ।

सेठाणी—मूं सरग में गीछी—थां के कई काम—थां के कई काम—बोलो कई काम ?

सेठजी—नहीं—नहीं—कोई त्रास काम नहीं था ?

सेठाणी—तो फिर मारो कई काम ? मूं सय जाणूं हूं—ये लाड़ाजी वण कठे चान्या ?

सेठजी—नहीं—नहीं—जरा बाहर जा रहा रहा था—पर देखो तो—तुम भीतर तो जाओ—धन्नाजी आ रहे होंगें ।

सेठाणी—सरग में जाय थांको धन्नाजी ।

(प्रवेश—धन्नाजी । प्रस्थान—सेठाणीजी)

धन्नाजी—ये सुसरे शहर के लोग—मिल जाँय तो डाँग ही तोड़ डालूँ—गरदन ही मरोड़ डालूँ ।

मन्ना—आइये, आइये धन्नाजी । क्या हुआ ? क्या हुआ ?

धन्नाजी—पूछते हो क्या हुआ ? इन लोगों को पता नहीं—हम इस्कूल के जवासे में जा रहे हैं—प्रसीडेंट बनने रास्ते में आ

रहा था, कि किसी सुसरे ने ऊपर से चौके का गढ़ा पानी सिर पर ढाल दिया ! हमने कहा—घरे कौन है यह सुसरा ? देखता नहीं आखें फूट गई हैं—तो ऊपर से अवाव मिलता है अवा है अवा—देखकर हो नहीं सकता ।

मन्ना—राम राम राम राम ! फिर ?

धन्नाजी—फिर ? फिर ? फिर क्या ? मैं वापिस घर चला आया । तो सुनो की मर्दाने कहती है ' कैसे वापिस आगये जी ? ' मैंने कहा— देखती नहीं—आखें फूट गई हैं ! तमाम सुधाफा और कमाज जो लराव हो गया है ! तो अवाव मिलता है आखें फूट गई थीं । धर्पो की तरह चलते हो !'

मन्ना—फिर ? फिर ?

धन्ना—फिर क्या ? हमरे कपड़े पहिन यहाँ चला आया । सोचा खसं भई नहीं तो नेर हो जायगी ।

मन्ना—अच्छा—अच्छा ! अच्छा किया । भग विद्योते ?

धन्नाजी—भग—रामराम रामराम भग !

मन्नाजी—हाँ हाँ भग ! भग तो अच्छी चीज़ है, पीनी चाहिये ।

धन्ना—अच्छा ! साओ तो पी खें !

मन्नाजी—घरे मुहसीराम भग जाना रे !

मुहसी—आवा सरकार !

मन्नाजी (पीते-पीते) बाह भई भंग तो बड़ी अच्छी बनी है ।

मन्नाजी—अच्छा तो अब चलना चाहिये ।

धन्ना—हाँ, हाँ चलना चाहिये ।

(प्रस्थान)

तुलसी—गये, सरकार गये । अरे हरिया भंग पीनी है ?

हरिया—पिलाओगे ?

(प्रवेश—शशि और शिरीष)

शिरीष—अरे हरिया ?

हरियो—भैयाजी ।

शिरीष—अभी तक क्या कर रहे हो ? रिहर्सल करने नहीं आना ?

शशि—बाह इतनी देर लगाते हो ?

शिरीष—देखो मैं घर जाकर सूट पहनकर आता हूँ । तुम दोनों स्कूल में आओ । देर न करना ।

हरिया—जी ! पधारिये अभी आते हैं ।

(प्रस्थान—शिरीष)

शशि—चले अपन भी ।

हरिया—भंग तो पी ले फिर चलेंगे ।

शशि—भग—पागल हो जाओगे तब ?

हरिया—उँह ! मम से भी कोई पागल होता है !

राशि—अच्छा !

हरिया—अच्छा तो तुझसी

तुझसी—देख ऊपर जा ! मुझे भयवान शकर को भोग लगा खेने दे फिर दूँगा । (छोटे को सामने रख, चमची से पीटते हुए गाता है)

जय शकर देवा, प्रभु जय शकर देवा ।

आनन्द बद्ध प्रबिवाशी जय शकर देवा ।—ॐ जय

भाँग पीछो, गाँजा पीछो पीछो चरस देवा—प्रभु पी०

मस्त बन जाओ पीकर भाओ तुम देवा—ॐ जय०

भाँग पीसी भाँग छानी, छोटे में राखी—प्रभु छोटे०

आकर पी जाओ तुम भाओ तुम देवा—ॐ जय०

मोटा तुझसीराम गावे दे आरति सारी—प्रभु दे०

जो जन गावे आरति कष्ट जायें दूर—ॐ जय०

बम बोझा ! बम बोझा !

शकर ! काँटा खगे न ककर !!

हरिया !

हरिया—जी !

तुझसी—खे पी जा ! और राशि भैया—यह तुम पी जाओ !

हरिया—(पीकर) बस ? और दो ।

तुलसी—नही बस !

हरिया—इतनी सारी भंग बची है, उसका क्या करोगे ?

तुलसी—चाहूँ अब हमारे भाग न लगेगा !

बस बोला, बस बोला ।

शंकर ! काँटा लगे न कंकर ॥

(पीता है ।)

(प्रवेश—सेठखीजी)

सेठजी—काहूँ उधम मचा राख्यो है जी थाने ? पूँ ?

तुलसी—ओह माँसा ! भंग पी रहा था ।

सेठखी—भागो सब मारा घर सँ ।

(हरिया और शशि भाग जाते हैं ।)

परदा गिरता है ।

बसत पक्षसे न किये जाँयग । आजकल कं लड़के-लड़कियाँ सिर पर चढे जा रहे हैं सिर पर ।

(प्रवेश—मुन्नु)

मुन्नु—बसते हेद मास्तर साब ।

हेद०—बसते । मुन्नु कहाँ है ?

मुन्नु—जी आ रहा है ।

हेद०—शशि और हरिया ?

मुन्नु —साब ने तो हमारी के नीचे गोखियाँ खेद रहे हैं ।

हेद —जाओ उन्हें बुलाकर आओ । अच्छे जल्दी आना ।

मुन्नु—जी । अभी आया ।

(प्रस्थान । प्रवेश—मुन्नु)

मुन्नु—परवाम हेद मास्तर साब ।

हेद०—परवाम । कौता कहाँ है ?

मुन्नु—साब सो रही है ।

हेद०—सो रही है ? अभी तक ? आओ बुलाकर आओ ।

जल्दी करो । आओ ।

मुन्नु—जी । यह गया ।

(प्रस्थान)

हेद-मा०—मियाँ तबखी ?

सब०—जिबबे ।

हेड-मा०—लडके तय तैयार है ?

तब०—बिलाशक क्रियले ।

हेड—हुँ । बैठ जाइये । ये लडके लोग ! टाइट की पायन्दी ही नहीं जानते । चार बजने को आये है—और अभी तक कोई नहीं आया । रिहर्सल न जाने कल इतम होगा । बड़ी परेशानी है (टहलते हैं—पैरों को पछाडते हैं) मुन्नू गया, और अभी तक नहीं आया । चुन्नू गया और अभी तक नहीं आया । बड़ी परेशानी है । इन लडकों के मारे नाक में दम है ।

(प्रवेश—शिरीष और हारमुनियम मास्टर)

शिरीष—अजी हेड-मास्टर साब ! यह क्या ? अभी कुछ इंत-जाम नहीं हुआ ?

हेड-मा०—ओह ! आइये आइये शिरीष बाबू । मैं आप ही की तो राह देख रहा था । देखो न लडके लोग अभी था रहे हैं—और रिहर्सल की देख-भाल तो भला तुम्हें ही करनी होगी ।

शिरीष—(हाथ की छड़ी मेज़ पर फटकारते हुए) हाँ, हाँ ! वो तो मैं सब देख लूँगा—पर आपके लडके तो आने दीजिये । मेरे खयाल से यहाँ पर कोई पंक्डुआलिटी तो जानता ही नहीं । हमारी शहर की स्कूल में अगर इस तरह देरी हो जाय तो लडकों

को दिसासित कर दिया जाय । हमें यह बेहस्त जोक टाईम पसंद नहीं ।

हेट०—आपका कहना बिल्कुल ठुस्त्व है । पर सब पापी—तो इस गाँव के जोग-बाग ही एते हैं । आज कल के लड़के बिल्कुल आपनेस—यूँ समझिये । हमारे जमाने में हमन हमारे मास्टरों की क्या-क्या सेवा की है—क्या-क्या बरदास्त किया है—हम ज्ञा जानते हैं । एकमुबह डंडका मास्टर साथ के घर का आबू खगाले, पानी रींचने—कमा-कभी—जब मास्टरभीआ बामार हों या मैके गइ हों—रोगी भी पकाने और रात के एक मास्टर साथ के घेर भी दबाने ।

शिरीष—राय है पर हमारे भी तो जकसे होते हैं । गइं साल ही हमारी हाईस्कूल में जकसा हुआ था और मैं था सीक्रेटरी । किमकी मज्जा है एक मिमट भी देर से आब । और जनाब इस समय मैने भी एक माथम बनाया था और माया था ।

हेट०—अच्छा ॥ बताया तो कैसा बनाया था ॥

शिरीष—जी । बहुत अच्छा अभी ॥ आज़िये । म्याँ तबज्जी करा होइरे का टका बनाया—और हारमोनियम मास्टर करा पीरे बनाया ।

दीर्ना—बहुत अच्छा कराकराव ।

शिरीष—(खाँसकर) हँ सुनो ।

लव की बोट चली ओशन में मेरी,
छोटी सी बोट चली वोटर में मेरी—टेक
लव का ओशन, लव की बोट,
लव ट्रावेलर, लव ही सेलर,
तुम्ह बिन, हू हज़ अवर प्रोटेक्टर—धिसबोट
यह बोट—चली ओशन में

हेड-मा०—वाह भई वाह !

(प्रवेश—बड़े म्याँ)

बड़े म्याँ—आदाब अर्ज मास्टर साव !

हेड०—ओह ! आइये, आइये बड़े मियाँ । डाक्टर साहब
तैयार हैं ।

बड़े म्याँ—तैयार तो हो रहे हैं—पर आपको याद फर-
माते हैं ?

हेड०—जी मुझे ?

बड़े म्याँ—जी हाँ ! पूछते थे नाज़िम साहब जलसे में आने-
वाले हैं कि नहीं ।

हेड०—आपने कहा न कि वे दौरे में तशरीफ ले गये हैं ।

बड़े म्याँ—जी हाँ । थौर थानेदार साहब के बारे में भी
फरमा दिया है ।

हेट०—वाह बटे ग्याँ वाह ! क्या तारीफ की जाय आपकी ।
पर पड़ता हूँ—मुझे क्यों वाद करमाया ?

बटे ग्याँ—इस तो पता नहीं ।

हेट-मा०—तो मामूली तो पता होगा ।

बटे ग्याँ—हाँ शायद आज के जलमे में धनाजी मनाजी
को प्रसिद्ध बनाया जाय—येमा कहना हो आपसे ।

हेट-मा०—धनाजी-मनाजी प्रसिद्ध ?

बटे ग्याँ—हाँ शायद ।

हेट-मा०—पर सेठ लोग ?

बटे ग्याँ—अब यह तो—

हेट मा०—खैर खैर थलो थलो । थलें—जो डाक्टर साहब
करमायेंगे वही होगा । उसमें कौन-सी बड़ी बात है ? अरे पर
शिरीष बाबू ?

शिरीष—करमाइये ।

हेट-मा०—अरे ऐसा भइ । य अपने लख खोग या लपें
न तो बरा रिहसंज जिहमल कर लेया—कहीं योगला-योगला
न हो जाय ।

शिरीष—ओह, आप परवाह न कीजिये—शौच से पचारिये ।

(प्रस्थान—हेट मालर और बटे ग्याँ)

शिरीष—अजी तबलथीजी ?

तबल०—क्रिबले ।

शिरीष—मैं अभी आता हूँ । लडके लोग आवे तो बिठा देना ।

(प्रवेश—तुलसीराम)

तुल०—शंकर ! काँटा लगे न कंकर ! बड़ी दूर से चला आ रहा हूँ—पैर दूटे जा रहे हैं—साँस जोरों से चल रहा है—हाथ-पैर टूटकर गिरने को हैं—पर पता ही नहीं चलता । अब क्या करूँ कहाँ जाऊँ—कहाँ हूँ । शंकर काँटा लगे न कंकर !!

तबलची—ए ग्याँ ? किसका काम है ?

तुलसी—ग्याँ तू—और ग्याँ तेरी नानी ! हमसे ग्याँ कहता है ।

तबल०—पर क्रिबले ! किसका काम है ?

तुलसी—काम ? अहाहा ! काम ? (दिक्कियाँ खाता है) अहाहा !

हारमो०-मा०—अरे मास्टर ! भाँग-चाँग पी रखी है क्या ?

तुलसी—भाँग—भाँग—अहाहा क्यों आया था ? हाँ, हाँ—मेठाणीजी ने कहा, 'तुलस्यारे' ? मैंने कहा, 'माँ साब !' सेठाणीजी बोलीं—'हरियो कठे हेरे ?' मैंने कहा—माँ साब ! इस्कूल में गया होगा, जो कहा 'बुलालाउणी'—तो मैं दौड़ा चला आ रहा हूँ । न रुका हूँ न ठहरा हूँ—न साँस जी है—न पानी पिया है । न

दम लिया है न गीजा पिया है । न भग धी है, न रोटी खाई है ।
न भूख लगी है—बस बस भागा ॥ पला आ रहा हूँ—
भागा ह-ह ह ।

तबल०—यहाँ हरिया बरिया कोई नहीं है ।

तुल०—मैं उसे ढूँढ़ निकालूँगा । आता हूँ—पाटाक स ठस
पकड़ लाऊँगा । नरक से सरग से—कहीं से भी ।

(प्रस्थान । प्रवेश—हरिया और शशि)

शशि—क्या भग पान का मज़ा आया वार ।

हरिया—हाँ वार ! और गोबिपाँ सेजने का ? पर प भव
काम—जो हरमुनिपा मास्तर और तबलकीजी लो आगये । पर
हेड-मास्तर साब कहीं ?

शशि—हाँ का ! भभा हेड-मास्तर साब लो आये ही नहीं ।

हरिया—ये माँटर लोग सब के सब ऐसे ही होते हैं । तुद
तां टाहम में आते नहीं और हमें लग करत हैं ।

(प्रवेश—सुन्नु, मुन्नु और काम्ता)

सुन्नु—मैं डाकर बनूँगा ।

मुन्नु—नहीं मैं बनूँगा ।

काम्ता—नहीं मैं बनूँगी ।

सुन्नु—वाह तुम कैसे बन सकते हो !

मुन्नु—और तुम कैसे बन सकते हो ?

कान्ता—वाह ? तुम कैसे बन सकते हो ?

(प्रवेश—शिरीष बेंत को घुमाते हुए)

शिरीष—(बेंत को पास के टेबल पर ठपकारते हुए) साइ-लन्स ! यह क्या शोरगुल मचा रहे हो जी ?

(सब चुप हो जाते हैं)

शिरीष—कहाँ थे तुम लोग ?

सब—यहीं थे जी ।

शिरीष—चलो सब बैठ जाओ—रिहर्सल के लिए तैयार !

सब—जी ।

शिरीष—हरिया !

हरिया—जी ।

शिरीष—तुम्हारा पार्ट क्या है ?

हरिया—बंदर की कविता बोलना ।

शिरीष—याद है ?

हरिया—है ।

शिरीष—छंदे होकर बोलो ।

हरिया—जी । (बोलता है)

एक था बंदर, छोटा-सा बंदर,

रहता था अंदर, शहर के अंदर ।

शहर या अच्छा बहुत हो सुदर,
 माम या उसका शहर अलदर ॥

मुन्नु—माटर साथ ?

मुन्नु—मेरी गोसा छीन जा ।

शिराव—साहजन्त क्यों शोर मचाते हो जी ? आग हरिवा ।

हरिवा—शहर में लड़ा या सुन्दर मन्दर
 उसके ऊपर रहता था बदर ।
 उसको काटने आया चक्रुदर
 पौत्र उदा वो छू ले मतर ॥

शिराव—Well done—well done मुन्नु !

मुन्नु—जी ।

शिराव—तुम्हारा पार्ट ?

मुन्नु—बेटा भयजे मति ।

शिराव—अच्छा सुभाभी । हारमोनिम आर तबले क साथ ।

मुन्नु—जी । (गाता है)

बेग भयजे मति हो, आपस मांगि लावेंगा ।

बेटा भयजे मति हो आपस मांगि लावेंगा ॥

हागला प बैठक भई हागला पे बैठक—

हागला प (अच्छता है ।)

शिराव—फिर ?

चुन्नू—सा—साब—भूल गया ।

कान्ता—मैं बताऊँ साब ?

शिरीष—हाँ ।

कान्ता—मक्का झूँदेंगा ।

चुन्नू—हाँ साब—हाँ साब याद आया ।

डागला पे बैठके हँ, डागला पे बैठके

मक्का झूँदेंगा—हाँ—आँ—आँ—चेटा०

शिरीष—बैठ जाओ । तुम गधे हो—कुछ नहीं आता । कान्ता !

कान्ता—जी ।

शिरीष—तुम्हारा क्या पार्ट है ?

कान्ता—जी मेरा—ट्रिक्किल ट्रिक्किल लिटिल स्टार ।

शिरीष—याद है ?

कान्ता—जी याद है ।

शिरीष—वस एक ही पार्ट है ? और नहीं है ?

कान्ता—है ।

शिरीष—कौन-सा ?

कान्ता—नाटक में—गायन गाने का ।

शिरीष—थच्छा उसे शुरू करो ।

गशि—और भाई साब मेरा ?

शिरीष—कौन बोला ?

हरिया—शशि भैया !

शिरीष—शशि इधर जाओ ! क्यों बीच में बोलते हो ?
(भजन बैठकर) जाओ बैठ जाओ !

शशि—(धीरे से) भाग माताजी से
कर दूँ तो—

शिरीष—हाँ—कान्ता शुरू करो !

मुन्—मुन् सो जा । कांता गायन

कान्ता—चिड़िया कादने

मुन्—शाखत-शाखत—माँट

शिरीष—धुप रहो ली—मुम

हैं कान्ता शुरू करो !

कान्ता—(गायी है)

चिड़िया चूँ चूँ

मुग्गा लाग ला

चिड़िया चूँ चूँ

(' ' ')

म्याँ, घनाली

शिरीष—ओ

देद—अरे ? अज

तोपी थड़ा !

(प्रवेश—गोपी चंदा)

गोपी—सरकार !

हेड०—क्या - सरकार सरकार लगा रखी है—अभी तक कुर्सियाँ नहीं जमीं । तुम बिलकुल गधे हो । क्या खड़े हो ठल्लू की तरह । चलो जल्दी करो जल्दी ।

(कुर्सियों के जमाने का आवाज़ होता है—कुर्सियों पर सब लोग बैठ जाते हैं—बीच की दो कुर्सियाँ खाली हैं)

हरिया—शशि भैया ?

शशि—हाँ, मेरे भैया !

हरिया—अरे भैया ! यह आसमान क्यों घूम रहा है ?

शशि—और और यह धरती माता क्यों नाच रही है—आँखों के सामने ये काले-काले बादल क्यों मँडरा रहे हैं ?

शिरीष—झुप रहो जी । बातें मत करो ।

हेड-मास्टर—उपस्थित सज्जनो ! अत्यंत दिन है हर्ष का आज कि आप सब लोग हमारी स्कूल में पधारे हैं—और इधर तशरीफ लाकर हमारे स्कूल को पवित्र-पाक किया है ।

धन्नाजी—मन्नाजी ।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी ।

धन्ना—यह कौन-से पाक की बात है जी ?

मन्नाजी—शायद गरमी के पाक की या टंही के ।

हरिया—शशि जैया ।

शिरौप—शशि, इधर आओ ! क्यों बाँध में खोलते हो ?
(धन धँढकर) आओ बैठ जाओ ।

शशि—(धारे से) आज माताजी से शिष्यावत न
कर दूँ तो—

शिरौप—हाँ—काम्ता शुरू करो ।

मुन्नु—मुन्नु सो जा । काता गायन शुरू कर दे ।

काता—चिड़िया काटने की आई

मुन्नु—हालत-हालत—माँट साब गलत ।

शिरौप—बुप रहो जा—गुम बीच में बक-बक मन करो ।
हैं काम्ता शुरू करो ।

काता—(गाती है)

चिड़िया चूँ चूँ करने लागी मुन्ना जाग जा रे

मुन्ना जाग जा रे—मुन्ना जाग जा रे ।

चिड़िया चूँ चूँ करने लागी—

(प्रवेश—हेटमास्टर साहब काफ़र साहब बड़े
म्हीं धनाधी मन्नाजी और गाँव के पाँच-दस लोग ।)

शिरौप—ओ—आप लोग पधार आओ ?

हेट०—धरे ! धब तक कुर्तियाँ नहीं लगीं ! गोपी चदा ।

गोपी चदा ।

(प्रवेश—गोपी चंदा)

गोपी—सरकार !

हेड०—क्या - सरकार सरकार खगा रक्खी है—अभी तक कुर्सियाँ नहीं जमीं । तुम बिलकुल गधे हो । क्या खडे हो उल्लू की तरह । चलो जल्दी करो जल्दी ।

(कुर्सियों के जमाने का आवाज़ होता है—कुर्सियों पर सब लोग बैठ जाते हैं—धीच की दो कुर्सियाँ खाली हैं)

हरिया—शशि भैया ?

शशि—हाँ, मेरे भैया !

हरिया—अरे भैया ! यह आसमान क्यों घूम रहा है ?

शशि—और और यह धरती माता क्यों नाच रही हैं—आँखों के सामने ये काले-काले बादल क्यों मँडरा रहे हैं ?

शिरीष—चुप रहो जी । बातें मत करो ।

हेड-मास्टर—उपस्थित सज्जनो ! अत्यंत दिन है हर्ष का आज कि आप सब लोग हमारी स्कूल में पधारे हैं—और इधर तशरीफ़ लाकर हमारे स्कूल को पवित्र-पाक किया है ।

धन्नाजी—मन्नाजी ।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी ।

धन्ना—यह कौन-से पाक की बात है जी ?

मन्नाजी—गायद गरमी के पाक की या टंडी के ।

धना—ठीक है ठीक है।

हेड-मा०—और अधिक खुशी होने की तो यह बात है कि हमारे शहर गढ़ की यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट साहब—श्रीमान् डाक्टर साहब ने आज हमारी स्कूल के जलसे ॥ पधारने की मेहरबाबी की है।

(साक्षियाँ बजती हैं)

धना—जरूर जरूर !

मना—मारवाबी की—मारवाबी की।

हेड-मा०—हमारा तो विचार था कि छात्र के जलसे का भार हमारे डाक्टरसाहब पर ही डाल दिया जाय और हम निर्झित हो जायें—

धना—जरूर जरूर !

मना—हो जायें—हो जायें !

हेड मा —पर छात्र के जलसे का नेतृत्व हमारे शेरगढ़ के मशहूर सेठसाहब धनाजी और मनाजी स्वीकर करें ऐसी इच्छा मैं आप लोगों के सामने पेश करता हूँ। मैं आशा करता हूँ और मैं प्रार्थना करता हूँ कि ये छात्र के जलसे के सभा पति का स्थान लेकर मुक्त अनुपस्थित करेंगे।

धना—मनाजी ?

मना—हाँ धनाजी।

धन्ना—क्या करने का है ?

मन्ना—रामजी जाने ।

धन्ना—खड़े होकर कुछ बोलें ।

मन्ना—हाँ - हाँ ।

धन्ना—क्या बोलें ?

मन्ना—जो भी मन में आवे ।

धन्ना—अच्छा तो मैं बोलता हूँ ।

मन्ना—नहीं मैं बोलता हूँ ।

धन्ना—अच्छा तुम बोलो ।

मन्ना—नहीं नहीं, पहले तुम बोलो ।

धन्ना—नहीं पहले तुम ।

मन्ना—नहीं पहले तुम ।

धन्ना—अच्छा मैं बोलता हूँ ।

मन्ना—अच्छा तुम रहने दो—मैं ही बोल डालता हूँ ।

डाक्टर—आप दोनों इन खाली कुर्सियों पर पधारिये ।

धन्ना—नहीं नहीं सरकार यहीं मजे में हैं । क्यों मन्नाजी ?

मन्ना—हाँ धन्नाजी । बिलकुल ठीक है यहीं मजे में हैं ।

डाक्टर—नहीं नहीं आपको यहाँ आना ही पड़ेगा ।

धन्ना—अच्छा । अच्छा । आपका हुकुम बाला !

मन्ना—जरूर जरूर !

(दोनो खाली कुर्सियों पर बैठ जाते हैं)

धनाजी—दागडर साहब ! हेड मांटसाब ! छोरा छोरी
ओ ! हमें कुछ बोझणा खाखणा नहीं खाता है । दागडर साब
के हुकुम से हम दानो धनाजी मनाजी इन कुर्सी
पर बैठ गये हैं । हम खो रोजार खादुमी हैं । गाड़ी तकियों का
बैठनेवाले हम तो चाचे भी जमीन पर बैठ जाते पर लैर
कुर्सी पर बैठ गये । अब—अब—मनाजी खीट क्या कहें ।

मनाजी—हाँ हाँ ठीक है चलने दो—चलने दो ।

धना—तो अब जो कुछ काम हो—छोरा छोरी ओ—शुरू
कर दो । देरा मत करो । क्यों ठीक है न मनाजा ।

मना—हाँ हाँ ठीक है । चलने दो । चलने दो ।

हेड-मा०—अच्छा तो बच्चो ! अपना काम शुरू करो ।
काता ।

काम्ता—जी ।

हेड मा०—शुरू करो ।

काता—Twinkle twinkle little star
How I wonder what you are,
Up above the sky so high
like a diamond in the sky.

धना—शाबाश शाबाश !

डाक्टर—वेलडन—वेलडन । हिअर हिअर !

मन्ना—वाह घणो मजाको ।

हेड-मा०—अच्छा शशि !

शशि—मास्टर साब फिर !

हेड—अच्छा—अच्छा । चुन्नु ।

चुन्नु—जी—गाता हूँ ।

बेटा भणजे मति हो, आपण माँगी खावेगा ।

“ “ “ “
डागला पे बैठके, भई डागला पे बैठके

मक्का खावेगा—हाँ—बेटा भणजे

डाक्टर—वेलडन—वेलडन (तालियाँ)

धन्ना—मक्का खावेगा—वाह वाह !

मन्ना—घणो मजाको ! वाह सा वाह ।

हेड-मा०—हरिया !

हरिया—माँटर साब ।

हेड-मा०—बंदरवाली कविता । सुनिये साहजान ! यह कविता ख़ास बड़े म्याँ ने बनाई है—बड़ी अच्छी है—गौर से सुनिये ।

हरिया—(लडखडाता हुआ खड़ा होता है)

हेड०—अरे ? (स्वगत) पैर क्यों लडखडा रहे हैं ?

हरिया—बोलूँ साथ ?

हेड—हाँ—हाँ ।

हरिया—शुरू कर दूँ क्या साथ ?

हेड—हाँ दर मत करो ।

हरिया—जा शुरू कर देता हूँ पर साथ कविता बोलूँ ?

हेड—हाँ कविता ।

हरिया—कविता ही और कुछ नहीं साथ ?

हेड—सुनते नहीं ?

हरिया—जा हाँ कम सुनाई देता है । जी सुनिये शुरू करता हूँ ।

आकाश बदरों से घाया हुआ है । पाना में आकाश और बादलों से घिरा है । पृथ्वी पर अमरुद बदरों का टापू खड़ा है ।

हेड-मा०—(स्वागत) घरे रे ! यह क्या कर रहा है कविता बोल रहा है कि तमाशा कर रहा है ।

हरिया—आकाश में घनघोर गजना है और पत्र में भूख लगी है । बदर पान खवा रहा है ।

हेड—(घरे) घरे शिरीष बावू प्रोष्ट करो प्रोष्ट ।

शिरीष—हरिया ! एक था बदर छोटा-सा बदर !

हरिया—हाँ—हाँ—ठीक तो है ।

एक था वंदर, छोटा-सा वंदर ।

रहता था अंदर, पेट के अंदर ॥

शिरीष—पेट नहीं शहर ।

हरिया—हाँ—हाँ शहर !

एक था वंदर, छोटा-सा वंदर ।

रहता था अंदर, शहर के अंदर ॥

शहर था अच्छा बहुत ही सुंदर ।

ससुंदर, जलंदर, चकुंदर, मंदर ॥

(प्रवेश—तुलसीराम)

तुलसी—शंकर ! कौटा लगे न शंकर !

हेट-मा०—अरे अरे ? यह कौन ? तमाम जलसा खराब
हुआ जा रहा है ।

तुलसी—अर—र-र ! आसमान टूटा जा रहा है ।

दुनिया—पृथ्वी—आसमान चकर-चकर नाच रहा है, और
तुलसीराम पवन और पानी पर उड़ा जा रहा है, हरिया को
झेंडने, मांसाय का हुकुम बजाने, सरपट भागा चला जा
रहा है ।

हेट-मा०—शिरीष—शिरीष ! निकालो इस आदमी को ।

शिरीष—ए—निकल बहार !

तुलसी—ए—कौन निकाल सकता है तुलसीराम को !

आसमान से विमान उतर रहा है—दूखी देखी सब—
भगवान बुद्धाते ह—हरिया—हरिया—शेराखीनी ने कहा
'तुझसा रे ? मैंने कहा माता ।

धन्ना—अरे यह तो तुलसी ।

मन्ना—बाप रे ! अब तो कह देगा शेराखीजी से ।

तुलसी—शेराखी जा ने कहा—'अरे—उँ—हरियाई—भौर
उँ का बापी कान पकड़ के जा —मैंने कहा—जाया मैं साब ।

मन्ना—बाप रे !

धन्ना—धनी होंसजा रखो होंसजा ।

तुलसा—मैं दोका चला आ रहा हूँ माया चला आ रहा
हूँ—उकता चला आ रहा हूँ—पर आसमान टूटता है—हरिया
गहीं मिळता । अरे यह कौन—हरिया—हरिया ।

हरिया—कई है ?

तुलसा—चल तेरी मा

हेद०—उपस्थित सम्मनो ! माफ करना ! आज का जन्मा
यही से प्रथम होता है ।

परदा गिरता है ।

